INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

कृष्णा सोबती का कथा साहित्य और स्त्री

Dr. Sudha Niketan Ranjani
Department of Hindi
M. M. Mahila College, Ara

स्त्री विमर्श' को आज कई दृष्टिकोणों से देखने और समझने का प्रयास किया जा रहा है। 'स्त्री विमर्श' हमारे यहाँ डेढ़ दशक पहले ही 'स्त्री लेखन' (महिला लेखन) से आए स्वचेतना का परिणाम है। यह ठीक है कि स्त्री की दयनीय दशा का, उसके जीवन संघर्ष का चित्रण अनेक पुरुष लेखकों ने भी किया है, जो कई बार प्रभावशाली भी बना है, लेकिन वह रचना दृष्टि करूणा से उपजी हुई सहानुभूति तक ही सीमित है। उसमें आत्मानुभूति की आग और बेचैनी नहीं हैं इस संदर्भ में महादेवी वर्मा का कथन बिल्कुल ठीक है कि "पुरुष के द्वारा नारी का चरित्र अधिक आदर्श बन सकता है परंतु अधिक सत्य नहीं, विकृति के अधिक निकट पहुंच सकता है, परंतु यथार्थ के समीप नहीं। पुरुष के लिए नारीत्व अनुमान है परंतु नारी के लिए अनुभव। अतः उसके जीवन का जैसा सजीव चित्र वह में दे सकेगी, वैसा पुरुष बहुत साधना के लिए उपरांत भी शायद ही दे सके।"[i] इस कथन के अनुसार 'नारी में नारीत्व की सजग चेतना ही 'स्त्री चेतना' है और इसका प्रामाणिक चित्रण कोई स्त्री ही कर सकती है।

आधुनिक महिला कथाकारों की बात करें तो अश्क जी ने सही पहचाना है कि "सिर्फ एक कहानी लेखिका का नाम मेरे जेहन में आता है, जो पुरुष लेखकों के मुकाबले में कहीं से भी कमतर नहीं है - वे हैं कृष्णा सोबती। वे बंधन मुक्त भी हैं, आजाद भी। उनके अनुभवों का क्षेत्र विस्तृत है, लेकिन मँज गई, साहस की भी उनके यहाँ नहीं है।"[ii]

निस्संदेह, स्वातंत्र्योत्तर महिला कहानीकारों की कहानियों में कृष्णा सोबती का नाम महत्त्वपूर्ण है। कृष्णा जी की लेखनी में एक अदम्य साहस है परंपरिक मान्यताओं के के विरुद्ध आवाज उठाने का उसे चुनौती देने का उनका लेखन किसी भी तरह से पुरुषों से कमतर नहीं है।

सोबती जी नारी चरित्र को आदर्श की गरिमा से उतारकर यथार्थ के भावभूमि पर लेकर आती हैं। उनकी स्त्री पात्र पवित्र नहीं एक चरित्र है। यह विशिष्टता उनकी पहली कहानी संग्रह 'बादलों के घेरे' में भी देखी जा सकती है। ' बादलों के घेरे' कहानी की बात करें तो रचना प्रक्रिया की दृष्टि से यह एक रोमांटिक कहानी है। किन्तु इसके चरित्र यथार्थ दृष्टि के परिचायक हैं। इस कहानी की नायिका मन्नो है, नायक रवि। रवि मन्नो के प्रेम करता है मन्नो भी रवि से भावनात्मक जुड़ाव महसूस करती है किन्तु वह लम्बी बीमारी से ग्रस्त है जिसके कारण रवि के सामने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त नहीं करती। रवि की बुआ भी यही सलाह देती है कि "रवि जिसे तुम झेल नहीं सकते, उसके लिये हाथ न बढ़ाओ"[iii] रवि मीरा से विवाह कर लेता है पर दस वर्ष पश्चात भी वह नहीं पाता जो मन्नो में था, यही प्रेम की शक्ति है। कृष्णा जी की कहानियों के पात्र जीवन के निर्णायक स्थितियों में दो तरह से न्णय लेते हैं । एक, भावनात्मक स्तर पर और दूसरा व्यवहारिक स्तर पर।यहाँ रवि व्यवहारिक भरातल पर निर्णय लेता है।

'कुछ नहीं कोई ' की नायिका शिवा नैतिक मूल्यों को तोड़तो हुए अपने पति (रूप) को छोड़कर आनंद के साथ रहने का निर्णय करती है पर आनंद के मरणोपरान्त अपने निर्णय का आकलन करते हुए कहती है "अब आनंद नहीं मैं रह गई हूँ अब न कभी वह आँखें मेरी आँखें देखेंगी, न कभी मीठी देह मुझ पर प्यार बरसायेंगी जिसके लिये तन-मन का पानी उतारकर में एक दिन तुम्हारी गृहस्थी लांघ आयी थी... "[iv]

कृष्णा जी का कथा साहित्य नारी के लिये समाज में परिवार जैसी संस्था में सुरक्षा देखता है तथा परिवार की सीमाएं लांघने में असुरक्षा तथा तिरस्कार। "'कुछ नहीं कोई नहीं' और 'दोहरी सांझ' जैसी कहानियां प्रेम के दुर्निवार आकर्षण को उद्घाटित करती है- जिसमें थोड़ी देर को सारे परम्परागत नैतिक मूल्य बाढ़ में नदी किनारे के पेड़ की तरह बह जाते हैं।"[v]

'सिक्का बदल गया' 1948 की कहानी है जो 1947 के देश विभाजन पर आधारित है। इस कहानी में देश विभाजन की ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक पहलुओं से अलग मानवीय मन की पीड़ाओं को अभिव्यक्त की गई है। विभाजन में अपना देश, घर,बार छोड़ने की पीड़ा को लेखिका ने केंद्र में रखा है। कहानी की शुरूआत पौ फटने पर शाहनी के दरिया किनारे आकर नहाने से होता है, जहाँ वह पिछले पचास वर्षों से नहाती आ रही है। एक दिन वह इसी दरिया के किनारे दुल्हन बनकर आई थी। इन दिनों माहौल में तनाव फैला है। शाहनी शेरे और हुसैना को बुलाती है। शेरे की माँ के मरने के बाद शाहनी ने ही उसे पाल- पोस कर बड़ा किया है। लेकिन इन दिनों शेरा तीस-चालीस हत्यायें कर चुका है और दंगाइयों में वह भी शामिल है। हवेली की दौलत पर उसकी भी नजर है। शाहनी को खबर है कि रात में कुल्लूवाल (पड़ोसी गाँव) के लोग आए थे। शाहनी शेरे से कहती है कि " शेरे, आज शाहजी होते तो शायद कुछ बीच-बचाव करते ।"[vi] लेकिन शेरा ऐसा नहीं सोचता ,उसे लगता है- "आज शाहजी क्या, कोई भी कुछ नहीं कर सकता। यह होके रहेगा क्यों न हो ? हमारे ही भाई – बंदो से सूद ले-लेकर शाहजी सोने की बोरियाँ तोला करते थे। प्रतिहिंसा की आग शेरे की आँखों में उतर आई।" [vii]यह वही शेरा था जिसे शाहनी ने बेटे की तरह पाली था।

यह कहानी कथा और कथा वस्तु दोनों ही दृष्टि से पौढ़ कहानी है। स्वातंत्र्योत्तर कहानी में इस कहानी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिसमें पीड़ा , घुटन, असंवेदनशीलता, नैतिक मूल्यों के टूटने का दंश ,मानवीय मूल्यों के ध्वंस होने की अभिव्यक्ति है। 'थानेदार दाऊद खाँ शाहनी के लेने आया है। यह वही शाहनी है, जिसने उसकी मंगेतर के लिये सोने के कनफूल मुँह दिखाई में दिये थे। जो उससे मसीत के लिये भी तीन सौ रूपए चंदा ले गया था। वह शाहनी को कुछ सोना-चाँदी-नगदी साथ लेने का सुझाव देता है, जिसे शाहनी ठुकरा देती है।'

शेरा कहता है कि देर हो रही है। "देर- मेरे घर में मुझे देर ! आँसुओं की भंवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़। मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और यह मेरे ही अन्न पर पले हुए... नहीं, यह सब कुछ नहीं। ठीक है देर हो रही है -देर हो रही है।"[viii]

कैंप तक पहुँचाने आए दाऊद खाँ ने शाहनी की मनःस्थिति को समझकर एक संवेदनशील इंसान की तरह कहा "शाहनी, मन में मैल न लाना। कुछ कर सकते तो उठा न रखते । वक्त ही ऐसा है। राज पलट गया है, सिक्का बदल गया है..."[ix]

शाहनी की यह झकझोर देने वाली पीड़ा मानव मन के द्रवित कर देती है। यह कहानी देश के विभाजन की पृष्ठभूमि में नाते- रिश्तों के यकायक बदल जाने की पीड़ा को बड़े ही संवेदनशील तरीके से अभिव्यक्त करती है।

उनकी कहानियों में नारी आदर्श के प्रति पूर्णतः मोहभंग दिखाई देता है। 'मित्रो मरजानी' की 'मित्रो' सारे परम्परागत मान्य आदर्श और सारे नैतिक मान्यताओं को अस्वीकार करती हुई अपनी देह की जरूरत को अपनी जुबान से करती है - अब तुम्हीं बताओ जिठानी, तुम जैसा सत बल कहाँ से पाऊँ लाऊँ? देवर तुम्हारा मेरा रोग नहीं पहचानता। बहुत हुआ हफ्ते पखवारे... और मेरी इस देह में इतनी प्यास है, इतनी प्यास की मछली सी तड़पती हूँ।"[x]

यहाँ सोबती जी नारी के पुराने बिम्बों को चुनौती देती नजर आती हैं। मित्रो का व्यक्तित्व उन सभी आदर्श मान्यताओं के विरुद्ध जाता है जिसमें सभी स्त्रियों का पति से संतुष्टि का भाव या पति परमेश्वर जैसी परिकल्पना है। ''वह हाड़ मांस की एक ऐसी नारी है जो धर्म (पातिव्रत्य) और संस्कृति के नाम पर दबने वाली या कुंठाओं का शिकार बनने वाली नहीं है। वरन् अपनी आवश्यकताओं को (शरीर की) खुलकर स्वीकारने और पूरा करने वाली है।"[xi]

कृष्णा जी अपने लेखन में पुरुष को अपराधी या गलत बताकर औरत की स्थिति का वर्णन नहीं करती और न ही उसके व्यक्तित्व और नियति के लिए पुरुष को जिम्मेदार मानती है। उनके यहाँ इस तरह का सरलीकरण है ही नहीं कि स्त्री और पुरुष का संबंध अनिवार्यतः हर स्थिति में किसी सोची समझी साजिश के तहत शोष्ज्ञण का संबंध है। अगर ऐसा लगता है तो यह संबंधों के 'डायनेमिक' के कारण है या स्त्री स्वयं को 'रसर्ट' न कर पाती है इसके कारण। इस समस्या को वे बहुत ही संवेदनशील तरीके से पकड़ती है। ''सोबती का संसार स्त्रियों और पुरुषों का समवेत संसार है, एक दूसरे के संदर्भ या मुकाबले में खड़ा संसार नहीं।"[xii]

इनकी लगभग सभी कहानियों में स्त्री-पुरुष का एक समन्वित रूप दिखाई देता है। विद्रोह की प्रवृति नारी पात्रों में है लेकिन वे पुरुष के प्रति अपमानित दृष्टि नहीं रखती। वे अपने होने का अहसास दिलाती है लेकिन सामाजिक नैतिकता और मान्यताओं को नहीं नकारतीं। 'ऐ लड़की' की अम्मा को यह दुःख है कि उनकी बेटी ताउम्र अकेले रहना चाहती है। वह उससे पूछती है - ''लड़की अपनी इस इकहरी यात्रा में क्या प्रमाणित करेगी? कुछ भी नहीं। संग-संग जीने में कुछ रह जाता है, कुछ बह जाता है। अकेले में न कुछ रहता है, न कुछ कहता है। यह संसार ही सत्य है। इसके बाहर और परे नहीं कुछ नहीं।''[xiii] कृष्णा जी जीवन रूपी नाव को अकेले चलाने में विश्वास नहीं रखतीं। वे जानती हैं कि समाज की पहली इकाई परिवार है और परिवार स्त्री-पुरुष दोनों से बनता है इसलिए जीवन में एक दूसरे की अनिवार्यता आवश्यक हैं देखा जाय तो यहाँ स्त्री संघर्ष का स्वर अमूर्त नहीं है।

भारतीय परिवेश से उन्हें लगाव है। वह अपने इस परिवेश में बहुत ही सहजता से जीती है। एक गृहस्थी बसाने की चाह और भी पूर्ण भारतीय पारिवारिक ढंग से यह बात उनकी हर नायिकाओं में मिलती है। उनके स्त्री-पात्र पर पाश्चात्य प्रभाव होने के बावजूद वे भारतीय परिवेश को पूर्ण रूप से नकार नहीं पातीं। अम्मा का यह कहना कि ''अपने लिए लड़का ढूँढ लिया है क्या? यह काम भी तुम्हें खुद ही करना होगा''[xiv] यह बात भारतीय परिवेश से भिन्न जाती है यहाँ स्त्री स्वतंत्रता की बात की जा रही है क्योंकि अम्मा स्वयं उसे जीवन साथी ढूंढने की स्वतंत्रता दे रही है। लेकिन विवाह सिर्फ स्त्री का समर्पण और समझौता बन जाय यह उन्हें मान्य नहीं है। 'ऐ लड़की' में बीमार वृद्धा का सूसन को 'शादी के बाद किसी के हाथ का झुन-झुना' न बनने की सलाह देना इसी बात का संकेत है।

कृष्णा जी की कहानी के नारी पात्र अपने जीवन संघर्ष में अकेली हैं, अपनी लड़ाई खुद लड़ती हैं, जिंदगी के निर्णय खुद लेती हैं और उन निर्णयों का परिणाम भी स्वयं भुगतती है। कृष्णाजी की चेतना का फलक बहुत व्यापक है जहाँ स्त्री चेतना से उत्पन्न होने वाले सवालों तथा सामाजिक समीक्षा को वे बहुत गहरे तक समझती है। वहीं वे जीवन से जुड़े अन्य पहलुओं को भी देखती है जैसे 'जिंदगीनामा' में विभाजन की विभीषिका को। उनका यह आग्रह बिल्कुल सही है कि कोई भी लेखक, उसका फैसला, उसका आकलन एक लेखन के तौर पर होना चाहिए स्त्री लेखक, दलित लेखक भारतीय लेखक, विदेशी लेखक आदि के रूप में नहीं। क्योंकि यह कुछ चीजों की व्याख्या करने के लिए सुविधाजनक हो सकती है लेकिन वे मूल्यांकन के आधार नहीं हो सकते।

---

[i] शृंखला की कड़ियाँ 1942-लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण, महादेवी वर्मा ,पृ74 .

2वर्तमान साहित्य रवीन्द्र कालिया - अतिथि संपादक (कहानी विशेषांक), अप्रैल-1999, पृ .352

[iii] बादलों के घेरे ,कृष्णा सोबती ,राजकमल प्रकाशन ,पृ13

[iv] वही1 .पृ ,

[v] हिंदी कहानीःअस्मिता की तलाश आधार प्रकाशन,1907 ,मधुरेश ,पृ306-305 .

[vi] हिंदी कहानी संचयन 182-.पृ ,2012 ,सतीश बुक डिपो,हरीश अरोड़ा .डॉ -संपादक .

[vii] वही182 .पृ ,

[viii] वही185 .पृ ,

[ix] वही18 .पृ ,6

[x] मित्रो मरजानी, कृष्णा सोबती,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण, 1994, पृ19.

[xi] केमालती .एम ., साठोत्तर हिंदी कहानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1991, पृ.42.

[xii] साप्ताहिक हिंदुस्तान, अर्चना वर्मा, फरवरी 1981, पृ9.

[xiii] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1993, पृ109.

[xiv] वही71 .पृ ,

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM